# पाठ 42

1. यद्यपि परमेश्वर द्वारा उद्धारकर्ता को भेजने की प्रतिज्ञा किए हुए कई वर्ष बीत चुके थे, क्या परमेश्वर अपना वचन भूल गया?

-नहीं।

2. आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में परमेश्वर ने अपना संदेश किसे दिया?

-भविष्यद्वक्ताओं के लिए।

3. आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में ये संदेश कहाँ लिखे गए हैं जो परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को दिए थे?

-परमेश्वर की किताब, बाइबिल में।

4. क्या अधिकांश इस्राएलियों ने परमेश्वर के नबियों की बात मानी?

-नहीं।

5. इस्राएलियों ने परमेश्वर के नबियों के साथ क्या किया?

-उन्होंने उन्हें मार डाला।

6. परमेश्वर के नबियों की सुनने के बजाय, इस्राएलियों ने किसकी सुनी?

-झूठे नबी।

7. झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने कहा कि वे परमेश्वर की सच्चाई कह रहे थे, परन्तु वे क्या कह रहे थे?

-शैतान का झूठ।

8. क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों की उपासना को स्वीकार किया, जिन्होंने अपनी बनाई हुई मूरतों की पूजा की, और मंदिर में भी परमेश्वर की आराधना की?

-नहीं।

9. परमेश्वर ने इस्राएलियों की उपासना को क्यों स्वीकार नहीं किया, जो उनकी बनाई हुई मूरतों की पूजा करते थे, और मंदिर में भी परमेश्वर की पूजा करते थे?

-क्योंकि परमेश्वर जानता था कि वे केवल अपने होठों से उसकी पूजा कर रहे थे।

-क्योंकि परमेश्वर जानता था कि वे अपने दिल में छवियों की पूजा कर रहे थे।

10. हमारे दिल के बारे में कौन जानता है?

-परमेश्वर।

11. परमेश्वर हमारे सभी हृदयों के बारे में क्या कहता है?

-परमेश्वर कहते हैं कि हमारे सभी दिल पाप से भरे हुए हैं।

12. यद्यपि अधिकांश इस्राएली मूर्तियों की पूजा कर रहे थे, क्या कोई इस्राएली केवल परमेश्वर की उपासना कर रहे थे?

-हां। कुछ ही थे।

13. केवल परमेश्वर की उपासना करने वाले इस्राएली किसकी बाट जोह रहे थे?

-वे उद्धारकर्ता को भेजने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

-परमेश्वर धैर्यवान है।

-परमेश्वर प्रतीक्षा करता है कि लोग पाप के मार्ग से मुड़ें और परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करें।

-परमेश्वर ने नूह के समय के लोगों के पाप के मार्ग से मुड़ने और परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करने के लिए 120 वर्षों तक प्रतीक्षा की।

-इस्राएलियों के पाप के मार्ग से मुड़ने और परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करने के लिए परमेश्वर ने 200 से अधिक वर्षों तक प्रतीक्षा की।

-परन्तु इस्राएली पाप के मार्ग से न फिरे।

-इस्राएलियों ने सोचा कि ईश्वर उनके पापों को भूल जाएगा।

-क्या परमेश्वर उनके पाप के बारे में भूल गए?

-नहीं।

-इस्राएलियों ने सोचा कि ईश्वर उनके पापों का दंड नहीं देगा।

-क्या परमेश्वर सभी पापों की सजा देते हैं?

-हां।

-जैसे परमेश्वर ने नूह के दिनों के लोगों के पापों का दण्ड दिया, वैसे ही परमेश्वर ने इस्राएलियों के पापों का भी दण्ड दिया।

-परमेश्वर ने इस्राएल के दस गोत्रों को कैसे दण्ड दिया?

-परमेश्वर ने अश्शूरियों को इस्राएल के दस गोत्रों को जीतने के लिए भेजा, और अश्शूरियों ने उन्हें अपना दास बना लिया।

आइए पढ़ें 2 राजा 17:5-8

5-अश्शूर के राजा ने सारे देश पर चढ़ाई की, और शोमरोन पर चढ़ाई की, और तीन वर्ष तक उसको घेर लिया।

6-होशे के नौवें वर्ष में अश्शूर के राजा ने शोमरोन पर अधिकार कर लिया, और इस्राएलियों को अश्शूर को बन्धुआ कर दिया। उसने उन्हें हलह में, गोसान में हाबोर नदी के पास और मादियों के नगरों में बसाया।

7 यह सब हुआ, क्योंकि इस्राएलियों ने अपके परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया था, जो उन्हें मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से मिस्र से निकाल लाया था। वे अन्य देवताओं की पूजा करते थे

8 और उन जातियोंकी रीति पर चले, जिन को यहोवा ने उनके साम्हने से निकाल दिया या, और जो काम इस्राएल के राजाओं ने किए या।

-अश्शूरियों ने इस्राएल के दस गोत्रों को जीत लिया, और उनमें से बहुतों को अपना दास बनाने के लिए अश्शूर ले गए।

-अश्शूरियों ने अन्य देशों के लोगों को भी इस्राएलियों के साथ रहने के लिए लाया जो इस्राएल की भूमि में रह गए थे।

-जो लोग दूसरे देशों से लाए गए थे, वे परमेश्वर में विश्वास नहीं करते थे, बल्कि उनके द्वारा बनाई गई छवियों की पूजा करते थे।

-इन लोगों ने इस्राएलियों से विवाह किया जो इस्राएल की भूमि में रह गए थे, और एक नए लोग शुरू हो गए थे।

-इन नए लोगों को सामरी कहा जाता था।

-सामरी लोग परमेश्वर की उपासना अपने तरीके से करते थे, न कि परमेश्वर के मार्ग के अनुसार।

-जब परमेश्वर ने इस्राएल के दस गोत्रों को दण्ड दिया, तब परमेश्वर ने यहूदा के दो गोत्रों को कैसे दण्ड दिया?

-परमेश्वर ने यहूदा के दो गोत्रों को जीतने के लिए बेबीलोनियों को भेजा, और बेबीलोनियों ने उन्हें अपना दास बना लिया।

आइए पढ़ें 2 राजा 25:1-7

1-तब सिदकिय्याह के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपक्की सारी सेना समेत यरूशलेम पर चढ़ाई की। उसने नगर के बाहर डेरे डाले, और उसके चारों ओर घेराबंदी के काम बनाए।

2-राजा सिदकिय्याह के ग्यारहवें वर्ष तक नगर की घेराबंदी की गई।

3-चौथे महीने के नौवें दिन तक नगर में अकाल इतना अधिक बढ़ गया था कि लोगों के खाने के लिए भोजन नहीं था।

4-तब नगर की शहरपनाह तोड़ दी गई, और रात को सारी सेना राजा की बाटिका के पास के फाटक से होकर भाग गई, यद्यपि बाबुल के लोग नगर को घेरे हुए थे। वे अराबा की ओर भागे,

5-परन्तु बाबुल की सेना ने राजा का पीछा करके यरीहो के अराबा में उसे पकड़ लिया। उसके सब सैनिक उससे अलग हो गए और तितर-बितर हो गए,

6-और उसे पकड़ लिया गया। उसे रिबला में बाबुल के राजा के पास ले जाया गया, जहां उसे सजा सुनाई गई।

7-उन्होंने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसके साम्हने मार डाला। तब उन्होंने उसकी आंखें फोड़ दी, और उसे पीतल की बेड़ियों से बान्धा, और बाबेल को ले गए।

-बाबुलियों ने यहूदा के दो गोत्रों पर विजय प्राप्त की, और उनमें से बहुतों को अपना दास बनाने के लिए बाबुल ले गए।

-बाबुलियों ने यरूशलेम शहर को भी तबाह कर दिया।

आइए पढ़ें 2 राजा 25:9-12 और 21

9-बाबुलियों ने यहोवा के भवन, राजभवन और यरूशलेम के सब घरों में आग लगा दी। उसने हर महत्वपूर्ण इमारत को जला दिया।

10-सारी बाबुल की सेना ने, शाही रक्षक के सेनापति के अधीन, यरूशलेम के चारों ओर की दीवारों को तोड़ दिया।

11-जवानों का प्रधान नबूजरदान नगर में रह गए लोगों को, और सब लोगों को, और जो बाबुल के राजा के पास चले गए थे, उन्हें बन्धुआई में ले गया।

12-परन्तु सेनापति ने देश के निर्धन लोगों में से कुछ को दाख की बारियों और खेतों में काम करने के लिये छोड़ दिया।

21-इस प्रकार यहूदा अपने देश से दूर बन्धुआई में चला गया।

-बेबीलोनियों ने यरूशलेम शहर को कैसे नष्ट किया?

-उन्होंने मंदिर में आग लगा दी।

-उन्होंने सारे यरूशलेम को फूंक दिया।

-उन्होंने शहर के चारों ओर की दीवार को तोड़ दिया।

-परमेश्वर ने इस्राएल के दस गोत्रों और यहूदा के दो गोत्रों को दण्ड दिया क्योंकि वे पाप के मार्ग से नहीं हटे।

-बहुत वर्षों के बाद, यहूदा के लोगों ने जो बाबुल में रहते थे, परमेश्वर की दोहाई दी।

-उन्होंने परमेश्वर की दोहाई दी, उसके सामने अपने पापों को स्वीकार किया, और उससे उन्हें क्षमा करने के लिए कहा।

-क्योंकि परमेश्वर दयालु है, परमेश्वर ने उनमें से बहुतों को यरूशलेम लौटने की अनुमति दी।

-यहूदा के लोगों ने यरूशलेम लौटने पर क्या किया?

-उन्होंने मंदिर का पुनर्निर्माण किया।

-उन्होंने यरूशलेम शहर का पुनर्निर्माण किया।

-उन्होंने यरूशलेम नगर के चारों ओर की शहरपनाह को फिर से बनाया।

-यहूदा के जो लोग यरूशलेम लौट आए, उन्हें एक नए नाम से पुकारा गया।

-यहूदा के लोगों के लिए नया नाम क्या था जो यरूशलेम लौट आए थे?

-यहूदी।

-यद्यपि यहूदी ईश्वर की पूजा करते थे, फिर भी वे अपनी बनाई हुई मूर्तियों की पूजा करते रहे।

-इसलिए, परमेश्वर ने यहूदियों को जीतने के लिए दो और लोगों को भेजा।

-यहूदियों को जीतने के लिए परमेश्वर ने किन दो अन्य लोगों को भेजा?

-यूनानी और रोमन।

-सबसे पहले, परमेश्वर ने यूनानियों को यहूदियों पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा।

-यूनानियों ने यहूदियों को पराजित किया और उनकी भूमि पर अधिकार कर लिया।

-यूनानियों ने यहूदियों को ग्रीक भाषा भी सिखाई।

-यूनानियों के बाद, परमेश्वर ने यहूदियों को जीतने के लिए रोमनों को भेजा।

-रोमनों ने यहूदियों को हराया, और उनकी भूमि पर भी विजय प्राप्त की।

-रोमनों ने यहूदियों को कर चुकाने को कहा।

-रोमनों ने भी कई यहूदियों को लकड़ी के एक क्रॉस पर कीलों से ठोंक दिया।

-रोमन राजा का नाम सीजर था।

-सीजर रोम शहर में रहता था।

-रोमन किसकी पूजा करते थे?

-रोमनों ने कई छवियों की पूजा की।

-रोमन भी अपने राजा सीजर की पूजा करते थे।

-उस समय यरूशलेम में रहने वाले यहूदी नेताओं के तीन समूह थे।

-वे शास्त्री, फरीसी और सदूकी थे।

-यहूदियों के कुछ नेताओं को शास्त्री कहा जाता था।

-शास्त्री कौन थे?

-शास्त्री यहूदी नेता थे जिन्होंने परमेश्वर के वचनों को लिखा था।

-बहुत समय पहले, हमारे पास आज जैसी किताबें नहीं थीं।

-जब लोगों ने कुछ लिखना चाहा, तो उन्होंने कागज के एक लंबे टुकड़े पर लिखा जो दोनों सिरों से लुढ़का हुआ था।

-मूसा ने परमेश्वर के वचनों को कागज के एक लंबे टुकड़े पर लिखा था जो दोनों सिरों से लुढ़का हुआ था।

-चूंकि अधिक से अधिक लोग परमेश्वर के वचनों को पढ़ना चाहते थे, इसलिए परमेश्वर के वचनों को कागज के नए टुकड़ों पर लिखना आवश्यक हो गया।

-दिन भर, शास्त्री नए कागजों पर परमेश्वर के वही शब्द लिखते थे जो पुराने कागजों पर थे।

-चूंकि शास्त्री हमेशा परमेश्वर के वचनों को लिख रहे थे, उन्हें बहुत गर्व था।

-क्योंकि शास्त्री हमेशा परमेश्वर के वचनों को लिख रहे थे, उनका मानना था कि वे उन्हें समझते हैं।

-क्या केवल परमेश्वर के वचनों को लिखने मात्र से आप उन्हें समझ सकते हैं?

-नहीं।

-चूंकि शास्त्री हमेशा परमेश्वर के वचनों को लिख रहे थे, उनका मानना था कि उनमें कोई पाप नहीं है।

-क्या केवल परमेश्वर के वचनों को लिखने से आप पाप रहित हो जाते हैं?

-नहीं।

-अधिकांश शास्त्री ईश्वर को नहीं मानते थे।

-यहूदियों के कुछ अन्य नेताओं को फरीसी कहा जाता था।

-फरीसी कौन थे?

-फरीसी यहूदी नेता थे जिन्होंने परमेश्वर के वचनों की शिक्षा दी थी।

-फरीसियों ने यहूदियों को परमेश्वर के नियम भी सिखाए।

-इसके अलावा, फरीसियों ने अपने स्वयं के नियम भी बनाए जो उन्होंने यहूदियों को सिखाए।

-फरीसियों का मानना था कि उन्होंने परमेश्वर के सभी नियमों का पालन किया है।

-क्या कोई परमेश्वर के सभी नियमों का पालन कर सकता है?

-नहीं।

-चूंकि फरीसी हमेशा परमेश्वर के वचनों की शिक्षा देते थे, उन्हें बहुत गर्व होता था।

-क्योंकि फरीसी हमेशा परमेश्वर के वचनों को पढ़ाते थे, उनका मानना था कि वे उन्हें समझते हैं।

-क्या केवल परमेश्वर के वचनों को सिखाने से आप उन्हें समझ सकते हैं?

-नहीं।

-चूंकि फरीसी हमेशा परमेश्वर के वचनों को सिखा रहे थे, उनका मानना था कि वे पाप के बिना थे।

-क्या केवल परमेश्वर के वचनों को सिखाने से आप पाप रहित हो जाते हैं?

-नहीं।

-ज्यादातर फरीसी परमेश्वर में विश्वास नहीं करते थे।

-यहूदियों के कुछ अन्य नेताओं को सदूकी कहा जाता था।

- सदूकी कौन थे?

-सदूकी यहूदी नेता थे जो अमीर थे और मंदिर की रखवाली करते थे।

-क्योंकि सदूकी अमीर थे और मंदिर की रखवाली करते थे, उन्हें बहुत गर्व था।

-क्योंकि सदूकियों के पास बहुत पैसा था, वे मानते थे कि वे पाप रहित हैं।

-क्या सिर्फ ढेर सारा पैसा होने से आप बिना पाप के हो जाते हैं?

-नहीं।

-अधिकांश सदूकी ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे।

-इस दौरान यहूदियों ने ऐसे घर बनाए जिन्हें आराधनालय कहा जाता था।

-आराधनालय क्या थे?

-आराधनालय वे घर थे जहाँ यहूदी मूसा के लेखों को पढ़ने और चर्चा करने के लिए मिलते थे।

-यहूदियों ने अपने हर एक नगर में आराधनालय बनवाए।

-सप्ताह के अन्तिम दिन यहूदी अपने आराधनालयों में जाकर मूसा की बातें सुनते थे।

-कई बार, लोग मूसा के लेखन की व्याख्या करेंगे।

-लेकिन क्योंकि लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं करते थे, मूसा के लेखों की उनकी व्याख्या गलत थी।

-उस समय अधिकांश यहूदी ईश्वर को नहीं मानते थे।

-उस समय, क्या कोई यहूदी थे जो ईश्वर में विश्वास करते थे?

-हां।

-कुछ ऐसे भी थे जो परमेश्वर में विश्वास करते थे।

-ये यहूदी उद्धारकर्ता को भेजने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रहे थे।